क्या न पहनें

वशि्व-भर मे प्रतबिंधति पहनावों का अध्ययन करते हुए मरयम ओमदिी कहती है की मुख्यत: महलिाएं ही रूढविादी वास्त्रकि नयिमों का नशिाना बनती है।

2010 तक पेरसि की महलिाओं को पुरुषों के कपड़े पहनने के लएि पुलसि से कानूनन अनुमतलिेनी पड़ती थी, हालाँकि इसका पालन वास्तवकि रूप से कोई नहीं करता था। वक्त चलते इस दकयिानूसी क़ानून का नरिसन तो हो गया, कन्तिु इसके एक साल बाद ही फ्रांस बुर्खे पर सार्वजनकि प्रतबिन्ध लगाने वाला पहला यूरोपीय देश बन गया - वह नक़ाब जसिे मुसलमान अपने धर्म का आवश्यक अंग मानते है।

परन्तु फ्रांस ऐसा एकमात्र देश नहीं है जहाँ ऐसा हुआ हो। इस्लाम-सम्बन्धी परधिान पर प्रतबिन्ध लगाना आज वशि्व की एक प्रचलति प्रथा सी बन चुकी है। उदाहरणत: फ्रांस के अतरिक्ति बेल्जयिम व नेदरलॅड्स में भी बुर्खा नषिधति है, हालाँकि डच सरकार के गठबंधन के टूटने के पश्चात (जसिमे गीर्ट वल्डिर्स की दक्षणिपन्धी "फ्रीडम पार्टी" भी शामलि थी), इस कानून के दोबारा बदला जाने की संभावना है। इन देशों के मुकाब्ले उज्बेकी अधकिारीयों ने अधकि जटलिता दखिाते हुए हजिाब पर केवल मौखकि परबिंध लगाया जसि कारण इनकी बक्रिी गुप्त तौर पे होने लगी। इस सन्दर्भ में महलिाओं को चोरी-छुपे हजिाब पकड़ते हुए दुकानदारों के दृश्य याद कयि जा सकते है।

कोसोवो में भी सरकारी स्कूलों में हजिाब पर मनाही है तथा तुर्की व तुनशियिा जैसे धर्मनरिपेक्ष मुस्लमि देशों में इसे सार्वजनकि संस्थाओं में पहनने पर रोक है। न्यू यॉर्क टाइम्स के अनुसार इस प्रतबिन्ध का परणिाम यह है

कि महिलाएं न्यायालयों, अस्पतालों और संसद जैसी जगहों में नौकरी नही कर सकती। फैशन पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ व महिला अधिकार एक्टविस्ट ने तो हिजाब को एकसमान अपना ही लिया है, इसी न्य यॉर्क टाइम्स के लेख का यह भी कहना है की तुर्की में हिजाब के प्रति सामाजिक धारणाएं बदल रही हैं, जहाँ इसे हमेशा से निचले व अनपढ़ वर्ग से सम्बधित किया जाता था। फ्रांस से लेकर तुनिशिया तक किए गए हिजाब के प्रतिबंधन के स्पष्टीकरण अधिकतर एक समान ही प्रतीत होते हैं: इस्लामी कट्टरपंथिता के बढ़ाव की रोकथाम, महिलाओं का मुक्तिकरण, या फिर रोज़मर्रा तौर पर चेहरे को ढकने की निसंदेह अव्यहवहारिकता।

इसके विपरीत इटली के Castellammare di Stabia नामक शहर ने गैरसामाजिक गतिविधियों की रोकथाम के चलते मिनी-स्कर्ट को वर्जित कर दिया गया है। इस सन्दर्भ में शहर के मेयर का यह तर्क था कि यह नया नियम नागरिकों में "शिष्टता व मिलिजुलकर रहने के भाव" को बढ़ावा देगा।

विश्व के अन्य हिस्सों में भी अनुचित और उत्तेजक पहनावे पर धावा बोला जा रहा है, उदाहरणत: इंडोनेशिया के असह रांत में तंग कपड़ों पर, चैस के मैच में क्लीवेज-वर्धन करने वाले वस्त्रों पर या फिर उस चार बच्चों की माँ का अपनी उम्र के विपरीत छोटे कपड़े पहनने के कारण हैवरसेस्टर शहर के हर पब में प्रवेश निषिधित करना। किन्तु असभ्य परिधान की परिभाषा की एक देश से दूसरे देश पर निर्भरता का प्रमाण सूडानी पत्रकार लुबना अहमद हुसैन को २००९ में मिला जब उसे अश्लील पहनावे के आरोप के अंतर्गत एक महीने की जेल हुई। उसका एकमात्र जुर्म था: पैंट पहनना ।

जहाँ एक ओर अमेरिका में केवल कुछ स्कूलों और म्यून्सपिाल्टियों में सेग्गिंग (पुरुषों द्वारा कमर के बहुत नीचे पैंट पहनने का प्रचलन) वर्जित है वहीँ मुस्लिम बहुसंख्य ईरान में हिजाब पेहेनना अनिवार्य है । यह वही इस्लामी गणतंत्र है जो हर वर्ष अत्यधिक पश्चिमी पहनावे पर सख्ती के लिए कुख्यात है । तंग पैंट ? ज़्यादा छोटी जैकेट ? बालों का प्रदर्शन? यदि आप एक ऐसी स्त्री है जिसने इनमे से किसी भी प्रश्न पर हाँ कहा है तो यह संभव है की कभी न कभी आपको यहाँ की "मोरल पुलिस" द्वारा पूछताछ के लिए रोका गया है । ताकि पुरुष और स्त्रियों में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो, ईरान ी सरकार ने वर्ष 2011 में पुरुषों के सम्मोहक (अथवा "ग्लैमरस") हेयरस्टाइल और उनके द्वारा पहने गए गले के हारों को भी एक फैशन त्रासदी करार कर दिया है।

गुयाना में आदमियों को औरतों के कपड़े पहनने की अनुमति नहीं है । लेकिन वहां की सरकार पर कटाक्ष करने से पहले फ्री स्पीच डबिट को अपने आस पास की परिस्थितियों का ब्यौरा करना चाहिए । नियमानुसार लड़को और लड़कियों को परीक्षा देते समय 'सब-फस्क' नामक यूनिफार्म पहननी होती है जो कि दोनों लिंगों के लिए एकसमान नहीं होती । लड़कों के सब-फस्क में एक गाढ़े रंग का सूट, मोज़े, काले जूते, सफ़ेद शर्ट, कॉलर और बो-टाई होते हैं किन्तु लड़कियों को एक गाढ़ी स्कर्ट (अथवा पैंट), सफेद ब्लाउज (या कॉलर सहित शर्ट), काली टाई या रिबन, काली स्टॉकिंग्स व जूते तथा इच्छानुसार काला कोट पेहेन ना होता है ।

वाक्-स्वतंत्रता पर चर्चा के अपने ब्रायन पेसुब्फूसक ल्लोट ने पाया कि युवक एवम् युवतियों को अपनी यूनिफार्म की अदलाबदली की अनुमति नहीं है । जब पेल्लोट ने अपने जेंडर व डेवलपमेंट परीक्षा के लिए अपनी एक महिला सहपाठी के साथ अपनी यूनिफार्म बदलने का निवेदन किया तब यूनिवर्सिटी ने उसे साफ़ तौर पर "ना" कहा । प्रॉक्टर के क्लर्क ने पेल्लोट को जवाब में यह लिखा की हालांकि सब-फस्क की जेंडर-निर्भरता यूनिवर्सिटी में एक "मुख्या चर्चा का विषय है", लेकिन अभी के लिए कुछ व्यक्ति-विशेष के लिए नियम बदलना असंभव है सिर्फ इसलिए कि वे इनसे असहमत हैं ।

प्रकाशित:June 19, 2012